

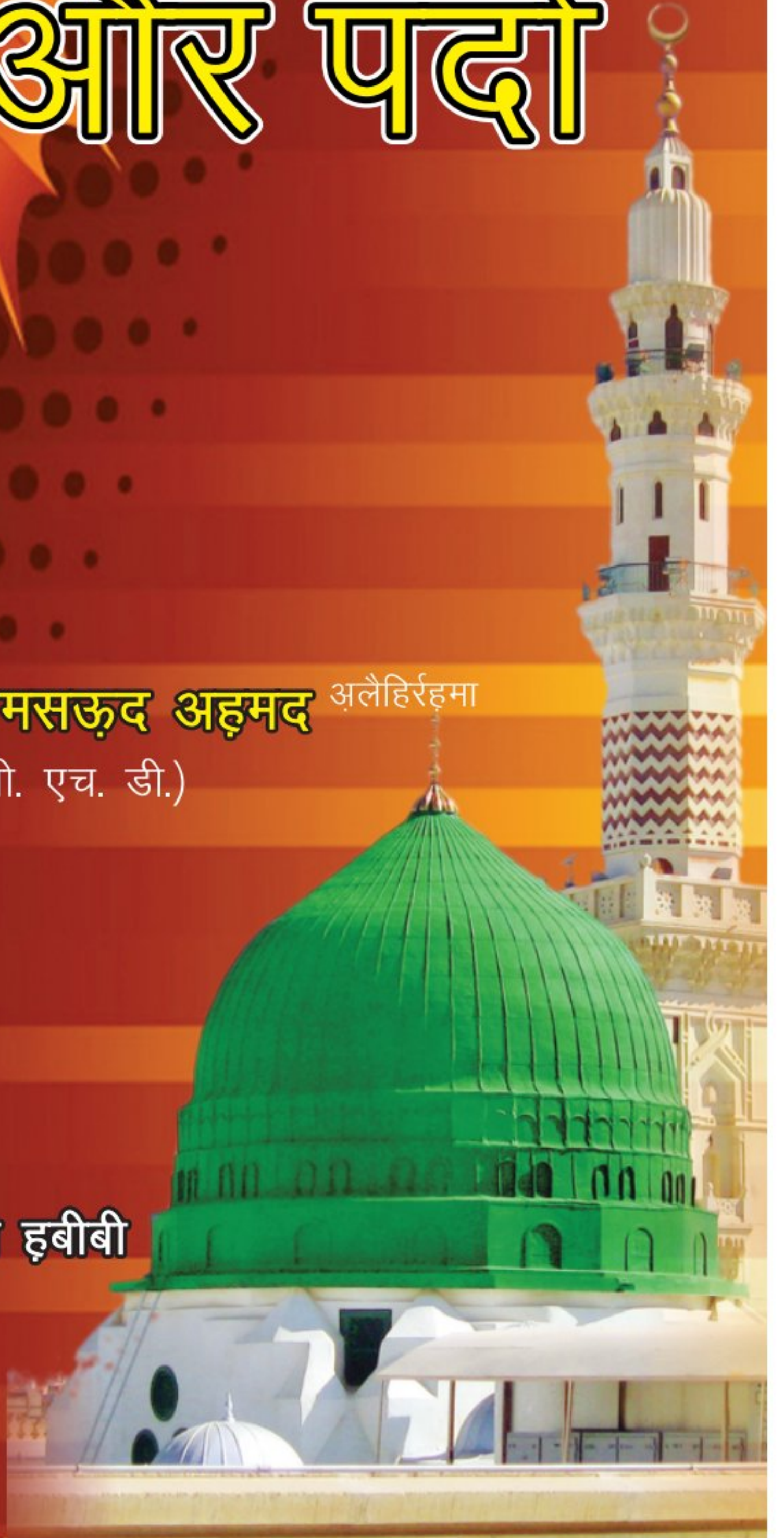
# औरत और पर्दा

प्रोफेसर डॉ० मुहम्मद मसऊद अहमद अलैहिर्रहमा  
(एम. ए., पी. एच. डी.)

बएहतेमाम  
मुफ़्ती मुहम्मद मुजाहिद हुसैन हबीबी

नाशिर

मदीनतुल उलूम इन्स्टीट्यूट, तोपसिया  
ऑल इण्डिया तब्लीगे सीरत, कोलकाता, पश्चिम बंगाल  
6 तालतला लेन, कलकत्ता-14 Mob.: +91 9830367155





और घरों में ठहरी रहो और बेपर्दा न रहो  
जैसे अगली जाहिलीयत की बेपर्दगी (अहज़ाब: 33)

# औरत और पर्दा

प्रोफ़ेसर डॉ० मुहम्मद मसऊद अहमद अलैहिर्रहमा  
(एम. ए., पी. एच. डी.)

बएहतेमाम  
मुफ़्ती मुहम्मद मुजाहिद हुसैन हबीबी

हिन्दी  
मुगीस अहमद ख़ान कादिरी  
अमेठी (यू० पी०)

नाशिर  
मदीनतुल उलूम इन्स्टीट्यूट, तोपसिया  
ऑल इण्डिया तब्लीगे सीरत, कोलकाता, पश्चिम बंगाल  
6 तालतला लेन, कलकत्ता-14 Mob.: +91 9830367155

**Rs. 20/-**



## بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

निसाइयात (औरत) की तारीख़ बड़ी दर्दनाक और कर्बनाक (तकलीफ़दह) है, ये इन्सानियत की पेशानी पर बदनुमा दाग़ है, अफ़सोस! जिसके आग़ोश में इन्सान ने परवरिश पाई, उसी आग़ोश (गोद) को ज़ख़्मी किया। जिसने बुलन्दियों पर पहुँचाया, उसी को परस्तियों में डाला—सरज़मीने अरब में अय्यामे जाहिलीयत (जाहिलीयत के दिनों) में मुआशरे (समाज) की नज़र में ख़वातीन की जो क़द्र व कीमत थी उसका कुछ अन्दाज़ा एक अरब शायर के इन ख़्यालात से होता है:

1— लड़कियों को दफ़न करना ही सबसे बड़ी फ़ज़ीलत है।<sup>1</sup>

2— मौत औरत के हक़ में अज़ीज़ तरीन मेहमान है।<sup>2</sup>

कुरआने करीम के मुतालआ (पढ़ने) से मालूम होता है कि उस ज़माने में लड़कियों की विलादत मर्द के लिये अज़ाबे जाँ थी—जब कोई मर्द ये ख़बर सुनता तो उसका चेहरा मारे गुस्से के सियाह हो जाता और वो उसी ग़म में कुढ़ता<sup>3</sup>—लोग लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न कर दिया करते थे जिसके लिये कुरआने करीम में फ़रमाया गया कि क़यामत के दिन दफ़न होने वाली लड़की से पूछा जाएगा बता तुझे किस जुर्म की पादाश में क़त्ल किया गया?<sup>4</sup> यानी ऐसे सफ़फ़ाक़ बाप को क़यामत के दिन छोड़ा नहीं जाएगा। एक सहाबी ने अय्यामे जाहिलीयत में अपनी बेटी को ज़िन्दा दफ़न करने का दर्दनाक वाक़िया सुनाया तो वो खुद भी रोए और

<sup>1</sup> नियाज़ फ़तहपुरी, सहाबियात, मतबूआ: कराची 1962 ई0, पेज: 13

<sup>2</sup> नियाज़ फ़तहपुरी, सहाबियात, मतबूआ कराची 1962 ई0, पेज: 31

<sup>3</sup> कुरआने हकीम, सूर—ए—ज़ख़रफ़, आयत: 17

<sup>4</sup> कुरआने हकीम, सूर—ए—तकवीर, आयत: 8, 9



सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी रोते रहे—

हिन्दुस्तान का हाल अरब से भी बदतर था, यहाँ मरने वाले शौहरों के साथ उनकी जिन्दा बीवियाँ जलाई जाती थीं, इस रस्म को "सती" के नाम से पुकारा जाता था। फ्रांस के मशहूर मुअर्रिख़ (इतिहासकार/Historian) डॉक्टर गसतावली बान ने लिखा है:—

———"ये रस्म हिन्दुस्तान में आम हो चली थी क्योंकि यूनानी मुअर्रिख़ों ने इसका ज़िक्र किया है"<sup>5</sup>——इब्ने बतूता (वफ़ात 779 हिजरी/1378 ई0) जब हिन्दुस्तान आया तो उसने ये वहशतनाक मन्ज़र खुद देखे जिसका अपने सफ़रनामे में ज़िक्र किया है।<sup>6</sup> ऐसा ही एक मन्ज़र देखते देखते वो बेहोश होकर घोड़े से ज़मीन पर गिरने लगा तो लोगों ने सँभाला।<sup>7</sup>——1839 ई0 में लॉर्ड बैन्टिक ने सती होने या सती में मदद देने को जुर्म करार दिया। फिर भी जल्द ही हिन्दुस्तान में एक ऐसा वाक़िया पेश आया जिसमें शौहर की लाश के साथ उसकी जिन्दा बेवा को फूँक दिया गया। ये ख़बर सारी दुनिया में हैरत से सुनी गई——यूरोप भी इस मामले में किसी से पीछे नहीं रहा, वहाँ 1494 ई0 और 1521—1522 ई0 में जादूगरी के इल्ज़ाम में सैकड़ों औरतों और बच्चों को ज़बह कर दिया गया।<sup>8</sup>——डॉक्टर स्प्रिंगर ईसाई के मुताबिक़ दुनिया में 90 हज़ार औरतों को मुख़तलिफ़

<sup>5</sup> डॉक्टर गसतावली बान, तमद्दुने हिन्द (तर्जमा उर्दू: सय्यद अली बिलग्रामी) मतबूआ: कराची, 1962 ई0, पेज: 238

<sup>6</sup> अबू अब्दुल्लाह इब्ने बतूता, सफ़रनामा इब्ने बतूता (तर्जमा उर्दू: रईस अहमद जाफ़री) मतबूआ: कराची, 1986 ई0, पेज: 5

<sup>7</sup> अबू अब्दुल्लाह इब्ने बतूता, सफ़रनामा इब्ने बतूता (तर्जमा उर्दू: रईस अहमद जाफ़री) मतबूआ: कराची, 1986 ई0, पेज: 36—37

<sup>8</sup> नियाज़ फ़तहपुरी, सहाबियात, पेज: 11



ना—माकूल इल्ज़ामात में ज़िन्दा जला दिया गया।<sup>9</sup>—कुछ दिनों पहले बोस्निया में मुसलमान औरतों के साथ नसारा ने जो सफ़ाकाना सुलूक किया, सुन सुन कर इन्सानियत की रूढ़ काँप उठी। अमरीका जिसका शुमार तरक्की याफ़ता बर्रे आज़म (महाद्वीप) में किया जाता है वहाँ औरतों के साथ जो सुलूक किया जा रहा है, शायद तारीख़ (इतिहास/History) के किसी दौर में ऐसा सुलूक नहीं किया गया होगा।—हर पाँच मिनट के बाद एक औरत की इज़्ज़त का दामन तार तार किया जाता है। यानी चौबीस घण्टे में इस्मत—दरी (बलात्कार/Rape) के 288 हादस़ात रोनुमा होते हैं—आप खुद अपने ज़मीर (दिल) से पूछें ये जन्नत है या जहन्नम? मुख़तलिफ़ ज़राएम की तादाद इससे भी ज़्यादा है। चौबीस घण्टे में 1800 जुर्म किये जाते हैं।<sup>10</sup> (हम अल्लाह के लिये हैं और उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं!)

इस्लाम ने औरत पर बड़ा करम फ़रमाया और उसको पस्तियों से बुलन्दियों पर पहुँचाया और ऐसा रऊफ़ व रहीम रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) भेजा जिसने दुनिया की चीज़ों में खुशबू और औरत को पसन्द फ़रमाया—रूसी फ़लसफ़ी टाल्सटाय (वफ़ात 1910 ई0) ने हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत पर इज़हारे ख़्याल करते हुए ये हदीस पेश की है: “दुनिया की चीज़ें सिर्फ़ माल व मताअ (दौलत) हैं और दुनिया की अच्छी मताअ नेक औरत है।”<sup>11</sup>—

<sup>9</sup> नियाज़ फ़तहपुरी, सहाबियात, पेज: 11

<sup>10</sup> अख़बार जंग, कराची, शुमारा 5 मई 1993 ई0

<sup>11</sup> टाल्सटॉय, पैग़म्बरे इस्लाम (तर्जमा उर्दू) मतबूआ: लाहौर, 1920 ई0, पेज: 45



आपने औरतों पर जो करम फ़रमाया वो इन्सानियत की तारीख़ में सुनहरी हुरूफ़ से लिखा जाएगा। चन्द इरशादात और वाक़ियात मुलाहज़ा हों:

1— एक सहाबी ने अर्ज़ किया: "या रसूलल्लाह! सबसे ज़्यादा मुझ पर किसका हक़ है?" फ़रमाया: "तेरी माँ का" ये सवाल तीन मरतबा किया गया, आपने यही फ़रमाया, "तेरी माँ का"। फिर चौथी मरतबा अर्ज़ किया: "सबसे ज़्यादा मुझ पर किसका हक़ है?"——तो फ़रमाया: "तेरे बाप का"<sup>12</sup>

आपने मुलाहज़ा फ़रमाया, इस्लाम की नज़र में "माँ" की कितनी क़द्रो मंज़िलत है।

2— हज़रत अली कर्म्मल्लाहु तअ़ाला वज—हहुल करीम की वालिदा हज़रत फ़ातिमा बिनते असद (वफ़ात 11 हिजरी/632 ई0) का जब इन्तिक़ाल हुआ, हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी चादर शरीफ़ उनके कफ़न के लिये अ़ता फ़रमाई——और जब लहद खोदी गई तो आपने लहद में उतर कर अपने दस्ते मुबारक से बग़ली क़ब्र खोदी और मिट्टी बाहर निकाली और फिर खुद लेट कर देखा<sup>13</sup>——अल्लाहु अकबर! इस क़ब्र शरीफ़ की मंजिलत का क्या कहना! अफ़सोस सैकड़ो बार अफ़सोस जन्नतुल ब़कीअ शरीफ़ में इस क़ब्र शरीफ़ के चारो तरफ़ दीवारें चुन दी गई हैं, शायद इस लिये कि आशिक़ाने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) इसकी ज़ियारत से महरूम रहें।

3— हज़रत उम्मे सलमा रदियल्लाहु तअ़ाला अन्हा (वफ़ात 63 हिजरी/682 ई0) बेवा हो गई, आपके साथ यतीम बच्चे भी थे। परेशानी का अ़लम, कोई मददगार नहीं——सरकारे दो अ़लम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

<sup>12</sup> बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ (इस हदीस पर सबका इत्तेफ़ाक़ है।)

<sup>13</sup> अबू नसर मंज़ूर अहमद शाह मदीनतुर्रसूल, मतबूआ: लाहौर, 1992 ई0, ब—हवाला खुलासतुल वफ़ा, पेज: 293



अपने लिये पैग़ाम भेजा—हज़रत उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा चूँकि अयालदार (बाल बच्चों वाली) थीं, ख़्याल आया कि शायद सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बच्चों का बोझ महसूस करें, आपने उज़्र पेश करते हुए फ़रमाया: "अयालदार हूँ, यतीम बच्चे मेरे साथ हैं"—सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो जवाब इनायत फ़रमाया वो उन मर्दों के लिये इबरत व नसीहत है जो अयालदार बेवा औरतों का बोझ उठाने से पहलू तही करते (बचते) हैं—आपने फ़रमाया: "तुम्हारी अयाल, अल्लाह और उसके रसूल की अयाल है"<sup>14</sup>—अल्लाहु अकबर!

4—आपकी रज़ाई (दूध शरीक) बहन शीमा बिनते हारिस हालते कुफ़्र में एक जिहाद में कैद होकर आई और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने पेश की गई तो आप पहचान गए और अपनी चादर शरीफ़ पर बिठाया, फ़रमाया: "अगर तुम मेरे पास रहना चाहती हो तो मेरे पास रहो, अपने क़बीले में जाना चाहती हो तो जा सकती हो"—शीमा ने अर्ज किया कि "अपने क़बीले में जाना चाहती हूँ"—आपने बहुत से ऊँट और बकरियाँ देकर एज़ाज़ो एकराम (इज़ज़त) से रवाना किया।<sup>15</sup>

इन वाक़ियात से अन्दाज़ा होता है कि हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़वातीन पर कितने मेहरबान थे?—औरतों पर आपका यही करम था कि जब पहली मरतबा मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुए तो ख़वातीन और बच्चियाँ इस्तिक़बाल के लिये बाहर आ गई और खुशी के तराने गाने लगीं—मदीना मुनव्वरा में हुज़ूरे अनवर

<sup>14</sup> अबू नस्र मंजूर अहमद शाह मदीनतुरसूल, ब—हवाला ज़रक़ानी, जिल्द: 2, पेज: 282 और मदारिजुन्नुबुव्वा, जिल्द: 2, पेज: 815

<sup>15</sup> अबू नस्र मंजूर अहमद शाह मदीनतुरसूल, ब—हवाला सीरते हल्बिया, जिल्द: 1, पेज: 440



सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुस्तक़िल क़याम से उनको कितनी खुशी थी इसका अन्दाज़ा इस शेर से लगाया जा सकता है।

(तर्जमा: हम बनू नज्जार की बेटियाँ हैं किस क़दर खुश नसीब हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पड़ोसी हैं।<sup>16</sup>)

जब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया से पर्दा फ़रमा रहे थे तो ख़िदमते अक़दस में ख़वातीन ही मौजूद थीं, ग़मो अलम (तकलीफ़) का आलम था, हज़रत सफ़िया रदियल्लाहु तआला अन्हा (वफ़ात 50 हिजरी/670 ई0) फ़रमा रही थीं: "ऐ अल्लाह आपकी सारी तकलीफ़ें मुझको अता फ़रमा दे"—मुहब्बत भरी इस दुआ को सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुन रहे थे—फ़रमाया: "सफ़िया ने सच कहा" आपने वसीयत फ़रमाई कि जब जसदे अतहर (पाक जिस्म मुबारक) पर मर्द सलातो सलाम पढ़ चुकें तो औरतों से कहना कि वो क़तार—दर—क़तार आकर सलातो सलाम पेश करें<sup>17</sup>—सुब्हान अल्लाह! कैसा करम फ़रमाया कि दुनिया से पर्दा फ़रमाते वक़्त भी याद रखा। ये तमाम हकीक़तें ख़वातीन के लिये बड़े फ़ख़्र का बाइस हैं, वो जितना फ़ख़्र करें कम है। किसी दूसरी मज़हबी किताब में ख़वातीन को इतनी अहमियत नहीं दी गई जितनी अहमियत कुरआने हकीम ने दी है।

सूर—ए—मरयम, हज़रत मरयम अलैहस्सलाम के नाम से मअनून की गई—सूर—ए—बक़रा, सूर—ए—तहरीम, सूर—ए—नूर वग़ैरा में ख़वातीन के लिये बहुत से अहक़ाम व मसाइल हैं—फिर अहम ख़वातीन का कुरआने करीम में

<sup>16</sup> अबू नसर मंज़ूर अहमद शाह मदीनतुरसूल, ब—हवाला खुलासतुल वफ़ा, पेज: 136

<sup>17</sup> शैख़ अब्दुल हक़ मुहदिदस देहलवी: मदारिजुन्नुबुव्वा, जिल्द: 2, पेज: 440



ज़िक्र किया गया है मसलन हज़रते हव्वा अलैहस्सलाम, हज़रत आइशा रदियल्लाहु अन्हा, हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम और हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की साहबज़ादियाँ, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा और हमशीरा (बहन), हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ज़ौज-ए-मुकर्रमा (मोहतरम बीवी), हज़रत मरयम अलैहस्सलाम, मलिक-ए-फ़िरऔन, मलिक-ए-सबा और सहाबियात रदियल्लाहु तआला अन्हुन्ना।

अल्लाह तआला ने औरत और मर्द के इज़्जिदवाजी तअल्लुक़ को इतना मुक़द्दस बनाया कि उसको अपनी निशानियों में से एक निशानी क़रार दिया<sup>18</sup>—और इसका मक़सद ये बयान फ़रमाया कि इन्सान सुकून व चैन हासिल करे और इस तअल्लुक़ को मुहब्बत व मेहरबानी का तअल्लुक़ क़रार दिया जिसमें हवस-परस्ती का शुब्हा तक नहीं—इस्लाम का ये तसव्वुर कहीं नहीं मिलता जबकि जर्मन फ़्लास्फ़रन नटशे ने तो यहाँ तक लिखा है:

“औरत का मक़सदे हयात सिर्फ़ ये है कि वो मर्द की कैद में रहे और उसकी ख़िदमत करती रहे”<sup>19</sup>—रूस का मशहूर फ़लसफ़ी काउन्ट लिव टाल्सटॉय (वफ़ात 1910 ई0) भी ख़वातीन के मुतअल्लिक़ अच्छी राय न रखता था—उसने इस्लाम की तर्जमानी करते हुए अपनी राय का इस तरह इज़हार किया है: “मर्द का फ़र्ज़ है कि औरत से अच्छा सुलूक करे और उसकी बाग़ ढीली न छोड़े बल्कि उसे घर में बन्द रखे क्योंकि घर औरत की आज़ादी के लिये काफ़ी है।”<sup>20</sup>—निकाह जैसे मुक़द्दस रिश्ते के बारे में भी

<sup>18</sup> कुरआने हकीम, सूर-ए-रूम, आयत: 21

<sup>19</sup> नियाज़ फ़तहपुरी, सहाबियात, पेज: 14

<sup>20</sup> टाल्सटॉय, पैगम्बरे इस्लाम (तर्जमा उर्दू: मुहम्मद फ़ैज़ुल हसन) मतबूआ: लाहौर, 1920 ई0, पेज: 54



टाल्सटाय की राय अच्छी नहीं। शायद इस लिये कि इस तर्जर्बे में वो नाकाम व नामुराद रहा, वो लिखता है:

“हमारे ज़माने में निकाह महज़ एक धोखा और एक फ़रेब हो गया है——हम इसको महज़ नफ़सानी ख़्वाहिश पूरा होने का वसीला जानते हैं।”<sup>21</sup>

अल्लाह तआला ने ख़वातीन को बड़ी रिआयतें दी हैं और रंज व मुसीबत में उनका पास व लिहाज़ रखा है——मसलन मुतल्लका (तलाक़ दी हुई) औरत के लिये ये हुक्म है कि इद्दत पूरी होने तक उसका ख़ाविन्द उसको राहत व आराम से अपने घर में रखे, उस पर तंगी न करे, अगर वो हामिला (पेट से) है तो फिर हमल की मुद्दत पूरी होने तक उसका सारा खर्चा बर्दाश्त करे और उसकी आसाइश व आराम का पूरा पूरा ख़्याल रखे। बच्चे की विलादत के बाद अगर मुतल्लका बीवी दो साल उसको दूध पिलाती है तो दो साल की उजरत भी अदा करे<sup>22</sup>——शायद ये बातें अजीब लगें मगर ये सब कुछ कुरआने करीम में है। हम ख़वातीन को बताते नहीं, अपने हुक्क़ ख़ूब याद रखते हैं। ख़वातीन को अहकामे शरीअत की पैरवी करते हुए कस्बे मुआश (कमाने) की इजाज़त है, कुरआने करीम में इरशाद हुआ कि मर्द की कमाई में से मर्द का हिस्सा है और औरत की कमाई में से औरत का हिस्सा है<sup>23</sup>——हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ौज-ए-मुतहहरा हज़रत ज़ैनब बिनते हज़श रदियल्लाहु तआला अन्हा (वफ़ात 20 हिजरी/640 ई0) अपने हाथ से

<sup>21</sup> टाल्सटॉय, पैग़म्बरे इस्लाम (तर्जमा उर्दू मुहम्मद फैज़ुल हसन) मतबूआ: लाहौर, 1920 ई0, पेज: 54

<sup>22</sup> कुरआने हकीम, सूर-ए-तलाक़, आयत: 6

<sup>23</sup> कुरआने हकीम, सूर-ए-निसा, आयत: 32



चमड़े को दबागत देतीं, फ़रोख़्त करके जो रक़म आती ग़रीबों और मिसकीनों में तक़सीम कर देतीं<sup>24</sup>—

अल्लाह तआला ने घरों में रहने वाली शरीफ़ ख़वातीन की इज़्ज़ते नफ़्स की हिफ़ाज़त के लिये मर्दों को बग़ैर इजाज़त लिये घर के अन्दर दाख़िल होने से मना फ़रमाया।<sup>25</sup> अगर किसी ख़ातून से बात करनी है तो अदब ये सिखाया कि पर्दे के पीछे से बात की जाए।<sup>26</sup> अगर कोई दावत पर बुलाए और घर में ख़वातीन भी मौजूद हों तो खाने के बाद ख़्वाह—म—ख़्वाह बातों में मसरूफ़ न हों बल्कि खा पीकर चले आएँ<sup>27</sup> हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तुफ़ैल ये सारे आदाब हमको मिल गए, अब ये हमारी बद नसीबी है कि हम अमल नहीं करते। अल्लाह तआला ने हमको पैदा किया, उससे ज़्यादा कौन हमारे हालात से वाकिफ़ होगा? हमारी भलाई और बुराई का उससे ज़्यादा किसको इल्म होगा?—हमको जिन बातों का हुक्म दिया गया है और जिनसे रोका गया, वो सिर्फ़ और सिर्फ़ हमारी भलाई के लिये—अल्लाह तआला बेनियाज़ है, ज़रा सोचें तो सही! बन्दों से उसको क्या गरज़ होगी?—वो हमारे फ़ाइदे के लिये हमको हुक्म देता है—पर्दे के बारे में ख़वातीन को जो हुक्म दिया गया वो उन्हीं के फ़ाइदे के लिये अगर वो सोचें और ग़ौरो फ़िक्र करें—सूर—ए—नूर और सूर—ए—अहज़ाब में ख़वातीन के पर्दे से मुतअल्लिक़ जिन आदाब का ज़िक्र किया गया वो हमारी तवज्जो के मुस्तहिक् हैं, तवज्जो फ़रमाएँ—

<sup>24</sup> इब्ने हज़र अस्क़लानी, अल—इसाबा मारिफ़तुस्सहाबा, जिल्द: 2, पेज: 602

<sup>25</sup> कुरआने हकीम, सूर—ए—अहज़ाब, आयत: 53, सूर—ए—नूर, आयत: 27

<sup>26</sup> कुरआने हकीम, सूर—ए—अहज़ाब, आयत: 53, सूर—ए—नूर, आयत: 27

<sup>27</sup> कुरआने हकीम, सूर—ए—अहज़ाब, आयत: 53



1— अपने अपने घरों में रहें, दौरे जाहिलीयत की तरह बेपर्दा न फिरे।<sup>28</sup>

2— दुपट्टे अपने गिरेबानों पर डाली रहें और ग़ैर मर्दों को अपना सिंगार न दिखाएँ।<sup>29</sup>

3— हाँ इन रिश्तेदारों पर छुपा सिंगार ज़ाहिर हो जाए तो हरज नहीं मसलन खाविन्द, बाप (दादा परदादा), ससुर, बेटे, भाँजे, भतीजे, बहुत ही बूढ़े और नाबालिग़ नौकर और नौ—उम्र लड़के।<sup>30</sup>

4— ख़वातीन ज़रूरत के वक़्त बाहर निकलें तो चादर का एक हिस्सा अपने मुँह पर डाल लें ताकि पहचानी जाएँ (कि शरीफ़ हैं) और शरारत करने वाले छेड़ छाड़ न करें।<sup>31</sup>

5— मुसलमान मर्दों को हुक्म दिया जाए कि वो अपनी निगाहें नीची रखें।<sup>32</sup>

6— मुसलमान औरतों को भी हुक्म दिया जाए कि वो अपनी निगाहें नीची रखें।<sup>33</sup>

आपने मुलाहज़ा फ़रमाया कि कुरआने हकीम हम से किस शर्मो हया और ग़ैरतो हमीयत का तकाज़ा करता है। रूसी फ़लसफ़ी टाल्सटॉय ने भी सज—बन कर, खुशबू लगाकर औरत के बाहर निकलने से मुतअल्लिक़ ये हदीस पेश की है जिसमें हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं: “जो औरत खुशबू लगाकर घर से निकली फिर इस गरज से लोगों के पास से गुज़री कि वो उसकी खुशबू

<sup>28</sup> कुरआने हकीम, सूर—ए—अहज़ाब, आयत: 33

<sup>29</sup> कुरआने हकीम, सूर—ए—अहज़ाब, आयत: 31

<sup>30</sup> कुरआने हकीम, सूर—ए—अहज़ाब, आयत: 31

<sup>31</sup> कुरआने हकीम, सूर—ए—अहज़ाब, आयत: 59

<sup>32</sup> कुरआने हकीम, सूर—ए—नूर, आयत: 30

<sup>33</sup> कुरआने हकीम, सूर—ए—नूर, आयत: 31



सूँघें, वो ज़ानिया है और जिन्होंने उसे देखा उनमें से एक एक की आँख ज़ानिया है।”<sup>34</sup>

मौजूदा सूरते हाल, दर्दमन्द दिल के लिये तशवीशनाक है, जिससे घर में रहने और पर्दा करने के लिये कहा गया था, वो बेपर्दा घर से बाहर है—और जिससे दरवाज़ा खुले रखने और ज़रूरतमन्दों की ज़रूरत पूरी करने के लिये कहा गया था, वो बन्द दरवाज़ों और सख्त पर्दों में हैं—इस्लामी मुआशरे के हर हाकिम व अफ़सर को हिदायत की गई थी वो दरवाज़ा खुला रखे, पहरे न लगाए, मगर यहाँ तो रसाई (पहुँचना) भी बहुत मुश्किल है और कभी कभी नामुम्किन भी हो जाती है—ख़वातीन के आदाब मर्दों ने अपना लिये, ऐ काश! हम अक्ले सलीम से काम लेते!

कुरआने हकीम में पर्दे के मुतअल्लिक़ जो कुछ हिदायात दी गई हज़रत आइशा सिद्दीका रदियल्लाहु तआला अन्हा (वफ़ात 58 हिजरी/677 ई0) ने उस पर अमल करके बेहतरीन नमूना पेश किया। अज़वाजे मुतहहरात में इल्मो दानिश (समझ) में कोई आपकी तरह न था—

तारीख़ व हदीस से हमें इन वाक़ियात का इल्म होता है:

1— एक मर्तबा हज़रत हफ़सा बिनते अब्दुर्रहमान रदियल्लाहु तआला अन्हा बारीक दुपट्टा ओढ़े हज़रत आइशा सिद्दीका रदियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुई। आपने उनका दुपट्टा चाक कर दिया और फ़रमाया “अल्लाह तआला ने सूर—ए—नूर में क्या फ़रमाया है?”—इस तम्बीह के बाद दबीज़ (मोटे) कपड़े की चादर मँगवा कर हज़रत हफ़सा रदियल्लाहु अन्हा को इनायत फ़रमाई।<sup>35</sup>

<sup>34</sup> टाल्सटॉय, पैगम्बरे इस्लाम (तर्जमा उर्दू) मतबूआ: लाहौर, 1920 ई0, पेज: 44

<sup>35</sup> अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन सअद ज़ोहरी, तबकाते इब्ने सअद, जिल्द: 8, पेज:



2— एक मर्तबा किसी के यहाँ आपका जाना हुआ, साहिबे ख़ाना (घर वाले) की दो जवान लड़कियाँ बग़ैर चादर, बारीक दुपट्टा ओढ़े नमाज़ पढ़ रही थीं, आपने हिदायत फ़रमाई कि आइन्दा दबीज़ कपड़े की चादर ओढ़ कर नमाज़ पढ़ी जाए।<sup>36</sup>

3— एक मर्तबा इब्ने इसहाक़ नाबीना हज़रत आइशा रदियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुए, आप पर्दे में हो गईं। इब्ने इसहाक़ ने अर्ज़ किया कि मैं तो नाबीना हूँ, आपने पर्दा क्यों फ़रमाया?, फ़रमाया: मैं तो बीना हूँ—देख रही हूँ<sup>37</sup>

4— हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक ज़माने में ख़वातीन मस्जिदे नबवी शरीफ़ में हाज़िर होतीं और ईदैन के लिये भी हाज़िर होतीं मगर नामुसाइद (बिगड़े) हालात की वजह से अहदे फ़ारूकी में ख़वातीन पर पाबन्दी लगा दी गई और उन्होंने मस्जिदे नबवी शरीफ़ में आना बन्द कर दिया। हज़रत आइशा सिद्दीका रदियल्लाहु तअ़ाला अन्हा ने हज़रत उमर रदियल्लाहु अन्हु (वफ़ात 23 हिजरी/663 ई0—664 ई0) के इस अमल की तार्इद फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया: "अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम होता कि ख़वातीन की हालत ये हो गई है तो आप उनको मस्जिद में आने से उस तरह रोकते जिस तरह बनी इसराईल की औरतों को रोक दिया गया था।"<sup>38</sup>

ऊपर दर्ज वाक़ियात से मालूम हुआ कि हज़रत आइशा सिद्दीका रदियल्लाहु तअ़ाला अन्हा ख़वातीन से क्या तवक्को रखती हैं और क्या चाहती हैं—इस्लाम जहाँ जहाँ फैला

<sup>36</sup> अहमद बिन हम्बल शीबानी, अल-मुसनद, जिल्द: 6, पेज: 796

<sup>37</sup> तबकाते इब्ने सअद, जिल्द: 18, पेज: 49

<sup>38</sup> नियाज़ फ़तहपुरी, सहाबियात, पेज: 58



एशिया में, अफ्रीका में, यूरोप में—साथ साथ पर्दा भी फैलता चला गया—

ये हमेशा इस्लामी शआएर (निशानियों) में एक अजीम शेआर (निशानी) शुमार किया गया—इन्तिहाई उरुज के जमाने में जबकि इस्लामी सल्तनत तीन बर्रे आजमों (महाद्वीपों) पर फैली हुई थी, पर्दा मुस्लिम और गैर मुस्लिम ख़वातीन के दरमियान एक इम्तियाज़ी निशान बना रहा—बल्कि गैर मुस्लिम हुकूमतों में भी ये इम्तियाज़ काएम रहा।

1914 ई0 से कब्ल रूस में मुस्लिम ख़वातीन पर्दे में रहतीं, कुरआने करीम हिफ़ज़ करतीं, वहाँ कुरआन हिफ़ज़ करने का औरतों और मर्दों में आम रवाज था। (अख़बारूल मुअय्यिद, मिस्र, 15 अगस्त 1902 ई0)—रूस की मुस्लिम ख़वातीन मदारिस भी काएम करतीं, एक रूसी ख़ातून सफ़िया ख़ानम ने अपने खर्च से एक अजीमुश्शान मदरसा काएम किया था—अल-गरज़ गुज़रे ज़माने में इस्लामी मुआशरे में जो कुछ तरक्की हुई, पर्दे में रह कर ही हुई। हद तो ये है कि ख़वातीन जिहाद में शरीक होतीं, ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी करतीं, कभी खुद जिहाद में हिस्सा लेतीं, ये सब कुछ हया के साथ, पर्दे में रह कर ही किया जाता। दौरे जदीद (नए दौर) में जहाँ इस्लामी इन्क़िलाब आया या इस्लाम के नाम पर इन्क़िलाब आया वहाँ पहली बात ये देखी गई कि बेपर्दा औरतें, पर्दादार हो गईं और उनकी हैबत दुश्मनाने इस्लाम के दिलों में ऐसी बैठी कि वो ख़ौफ़ज़दा हो गए—जदीद मुआशरे (नए समाज) की बेपर्दगी ने इस्लामी मुआशरे को कुछ न दिया और न तारीख़ में किसी बाब का इज़ाफ़ा किया—ये दर्दमन्द ख़वातीन के लिये सोचने की बात है। अगर बेपर्दगी तरक्की की ज़ामिन होती तो आज सारे आलम में हम इस तरह रूसवा न होते—मशहूर मुअरिख़ आर्नल्ड टोएम्बी ने एक जगह लिखा है कि इन्सानी मुआशरों की तबाही में औरत की आज़ाद



चलन और बेपर्दगी को बड़ा दख़्ल है। मुअरिख़ मौसूफ़ ने आलमी तारीख़ को गहरी नज़र से पढ़ने के बाद इस राय का इज़हार किया। इस लिये इसको किसी तअस्सुब या तंगदिली पर महमूल नहीं किया जाना चाहिये बल्कि इस तारीख़ी हकीक़त पर ठण्डे दिल से ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये—हकीक़त ये है कि इस्लाम ने मुआशरे की बुनियाद पाकीज़गी पर रखी है। हमागीर पाकीज़गी ज़िन्दगी के हर शोबे की पाकीज़गी,—मगरिबी साज़िशियों ने इस्लाम की हर माकूल बात को नामाकूल बना कर दिखाया, ऐसा प्रोपैगन्डा किया कि अक़लें माऊफ़ (अपाहिज) हो गईं और आँखें पट हो गईं—इस्लाम ने ख़वातीन पर बेशुमार एहसानात किये मगर एक पर्दे की माकूल हिदायत (जो ख़वातीन ही की इस्मत व इफ़त (इज़्ज़त और पाक—दामनी) और हुस्नो जमाल की हिफ़ाज़त की ज़मानतदार है) बाज़ ख़वातीन को अच्छी नहीं मालूम होती, दुश्मनाने इस्लाम ने इसकी अच्छाइयों को छुपाया और नाम निहाद बुराइयों को उछाला—इस तरह ख़वातीन के ज़हनों को परागन्दा करके इस्लाम की सच्चाई से उनको दूर कर दिया—ज़रा ग़ौर करें, ख़वातीन की बेपर्दगी ने जिस्मानी आराइश व ज़ेबाइश का रास्ता खोला, फिर उसने बेहयाई की सूरत इख़्तियार की और बेहयाई ने उरयानी (नंगेपन) और बदकिरदारी का दरवाज़ा खोल दिया—नौबत यहाँ तक पहुँची कि अब यूरोप और अमरीका इन्सानों की सरज़मीन नज़र नहीं आते, हैवानों और दरिन्दों के जंगल मालूम होते हैं—इस बेहयाई के जो नतीजे सामने आए, उनमें से चन्द एक ये हैं:

1— ख़वातीन का ग़ैर महफूज होना।

2— ख़वातीन के इग़वा और ज़िना की वारदातें आम होना।



3— ख़वातीन में जज़्ब-ए-उमूमत (ममता) का मर जाना।

4— बदनिगाही और परागन्दा ख़्याली आम होना।

5— मर्दों का जिन्सी अमराज़ (गुप्त रोग) में मुब्तला होना।

6— औरत के तक्दुस का पामाल होना।

अभी कुछ रोज़ की बात है पर्दादार ख़ातून की इज़्ज़त की जाती थी और अब भी की जाती है—बसों में उसके लिये सीट ख़ाली कर दी जाती थी लेकिन बेपर्दा ख़ातून की तकरीम (इज़्ज़त करने) के लिये लोग तैयार नहीं। वो बसों में जिस हाल में सफ़र करे किसी को कोई सरोकार नहीं। दौरे जदीद में औरत की बेपर्दगी ने इस हद तक रूसवा किया है कि वो अख़बारों, रिसालों और इश्तिहारों की ज़ीनत बन कर नफ़ा कमाने का एक वसीला बन कर रह गई है—जहाँ जहाँ ख़वातीन को जगह दी जाती है एहतेराम की वजह से नहीं, तिजारत चमकाने और नफ़ा उठाने के लिये—औरत पर इस्लाम की नज़र मुशफ़िक़ाना है और नए समाज की नज़र सिर्फ़ ताजिराना है—सच्ची बात ये है कि हमारी इन्फ़िरादी और इज्तिमाई अज़मतो शौकत का दारो मदार सिर्फ़ और सिर्फ़ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी में है—आलमी सतह पर हमारी रूसवाई की बड़ी वजह दिलों का इश्क़े मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़ाली होना और अमल का सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आरी (ख़ाली) होना। हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु (वफ़ात 23 हिजरी/643-644 ई0) ने सच फ़रमाया: "हम वो क़ौम हैं जिसको अल्लाह ने इस्लाम की बदौलत इज़्ज़त दी।"<sup>39</sup>

<sup>39</sup> मौलाना मुहम्मद कालिक काँधलवी, पर्दा और मुसलमान ख़ातून, मतबूआ: कराची, पेज: 15



# ऑल इण्डिया तब्लीगे सीरत, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

बंगाल की सरज़मीन पर तहरीक ऑल इण्डिया तब्लीगे सीरत तक़रीबन **1970** ई० से मस्लके अहले सुन्नत व जमाअत की फ़िक्र और नज़रिये को बढ़ावा देने के लिये रहनुमा-ए-अहले सुन्नत, इमामुत्तारिकीन, सिराजुस्सालिकीन, हुज़ूर मुजाहिदे मिल्लत अल्लामा शाह मुहम्मद हबीबुर्रहमान कादिरी हाशिमि अलैहिर्रहमा के ख़लीफ़ा हज़रत हाजी मुद्दस्सिर हुसैन हबीबी साहब क़िब्ला की सर-बराही में दीनी ख़िदमात अन्जाम दे रही है।

## मक़सद

- ◆ मुसलमानों में मज़हबी रुजहान पैदा करना, उन्हें फ़र्ज़ व वाजिब की तरगीब देना।
- ◆ दिलों में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी व इश्क़ का ज़ब्बा बेदार करना।
- ◆ मुसलमानों के दरमियान इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ की राह हमवार करना।
- ◆ स्कूलों में पढ़ने वाले छोटे बच्चों, नौजवानों और कारोबार से जुड़े हुए या माज़ूर हो चुके उम्र को पहुँचे हुए लोगों के लिये दीनी तालीम का इन्तिज़ाम करना।
- ◆ इस्लाम और मुसलमानों के तअल्लुक़ से जो ग़लतफ़हमियाँ पैदा की जा रही हैं उनका सुबूतों की रोशनी में माकूल जवाब देना।
- ◆ आम-फ़हम ज़ुबान में आम लोगों के लिये मज़हबी किताबें छापना।
- ◆ जगह जगह दीनी व मज़हबी मज्लिसें करना।
- ◆ कुदरती आफ़तों या फ़सादों के सबब तबाह-हाल लोगों की मदद करना।

## अल्लाह के करम से ये काम तीन डिपार्टमेंट

1- तालीम, 2- तब्लीग़ और 3- किताबों की पब्लिशिंग के ज़रिये अन्जाम दिये जा रहे हैं।

---

**MADINATUL ULOOM INSTITUTE, TOPSIA**

**ALL INDIA TABLEEGH-E-SEERAT, KOLKATA, WB**

**Email: [tableegh.e.seerat@gmail.com](mailto:tableegh.e.seerat@gmail.com) Mob. +91 9830367155**